LOK SABHA

Thursday, April 16, 1970/*Chaitra* 26, 1892 (*Saka*)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

(MR. SPEAKER *in the Chair*)

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

OBITUARY REFERENCE

MR. SPEAKER : Hon. Members, I have to inform the House of the sad demise of Dr. U. Misra, who passed away at Moscow on the 13th April, 1970 at the age of 62. He was a Member of the Third Lok Sabha during the years 1962-1967. He was a great freedom-fighter and went to jail before, during and even after the Quit India movement.

We deeply mourn the loss of this friend, and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF FINANCE, MINISTER OF ATOMIC ENERGY AND MINISTER OF PLANNING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Mr. Speaker, Sir, we are all grieved to learn of the passing away of Dr. U. Misra. He was drawn into the struggle for freedom in 1921 and was an active participant in political and social affairs. He was known as a good man. He was greatly interested in labour welfare and was Vice-President of the Jamshedpur Mazdoor Union for a number of years. He was a popular medical practitioner and rendered social service to the working classes in the form of free medical aid and advice.

In his death, we have lost a valuable political and social worker. May I request you Sir, to convey the condolences of this House to the members of his family.

DR. RAM SUBHAG SINGH (Buxar) : Mr. Speaker, Sir, on behalf of the Opposition, I request you to convey our deep sense of sorrow to the members of the family of Dr. U. Misra. Dr. U. Misra was one of the most popular personalities of Jamshedpur, and there, he used to take part in the cultural, political and labour activities. He was Vice-President of the Jamshedpur Labour Union and he was also President of the Indian Medical Association's Branch at Jamshedpur. In the Utkal cultural activities also he took interest and he presided over the Utkal Association for a long time. Whoever went to him and met him was impressed by his personality and he was very kind to the students and others who went and saw him there at Jamshedpur, and he used to help them also. By the passing away of Dr. U. Misra, Jamshedpur and particularly Bihar has lost a personality whose activities will be remembered for ever.

On behalf of the Opposition, I again request you to convey to the bereaved members of his family our deep sense of sorrow and grief.

SHRI LOBO PRABHU (Udipi) : Sir, I associate my party with the sentiments expressed already.

श्री शिवचंडिका प्रसाद (जमशेदपुर): अध्यक्ष महोदय, आप ने, लीडर आफ दी हाउस और अन्य पार्टी के नेताओं ने उदयकर जी के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित कर ही चुके हैं। फिर भी चूंकि वह मेरे क्षेत्र के भूतपूर्व एम० पी० थे और गत 1967 के चुनाव में मेरा उनका टकराव हुआ था अतएव उनके प्रति इस सदन में श्रद्धान्जलि समर्पित करना मैं भी अपना कर्तव्य समझता हूं।

श्री उदयकर मिश्रा जी एक फ्रीडम फाइटर थे। 1942 के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिए थे। फिर टाटा कम्पनी में डाक्टर बहाल हुए थे। पर 1958 के मजदूरों की आम हड़ताल में उन्होंने भाग लिया और उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा। तब से वह खुल कर पार्टी का काम करने लगे और 1962 के चुनाव में लोक सभा के लिए चुनाव लड़े और सफल हुए। पर उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने लगा। 1967 में जब इस

ने उनके विरुद्ध चुनाव लड़ने का फैसला किया तो उन्होंने उसका स्वागत किया था। उन्होंने कहा था कि दो फीडम फाइटर्स के बीच का चुनाव लड़ना शोभनीय है। चुनाव के प्रारंभ से अन्त तक हम दोनों के बीच कोई कटुता उत्पन्न नहीं हुई। हम दोनों का चुनाव अभियान बहुत शान्तिपूर्वक और उत्साहपूर्वक चला। चुनाव के बाद भी हम दोनों सदा मित्र बने रहे। उनकी बीमारी अवस्था में मैं उनसे बराबर मिलता था उनको दुख एक ही बात का होता था कि कम्युनिस्ट पार्टी के वर्कर होने के नाते उनका कोई भी पुत्र भारत में नौकरी नहीं कर पाया।

हम उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धान्जलि समर्पित करते हैं और उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। प्रभु उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): Sir, on behalf of my party, I associate myself with the sentiments expressed by the hon. Prime Minister and the leaders of other groups. Dr. U. Misra was a freedom fighter. Even when he was victimised by the Tatas, he never yielded before the pressure of the Tatas. I remember those days when he was victimised and eviction notice was served by the Tatas on him to leave the quarter where he was staying. In 1958 when four workers were killed by the police at the instance of the Tatas to suppress the strike by TISCO and TELCO workers, I remember those days when there was a reign of terror by the Tata regime in Jamshedpur and Dr. Misra led that strike of 1958. He was a great man. He was an emblem of simplicity and he was a leader not only of the working class of Jamshedpur but of every citizen of Jamshedpur. When he came to Parliament in 1962, it was he who raised the question of abolition of Tata zamindari in Jamshedpur. He apprised this House how three-fourths of Jamshedpur belonged to Tatas even in this 20th century, after 15 or 16 years of independence. I am so happy today that though Dr. Misra is not with us, a decision has been taken by the Bihar Government, perhaps at the instance of the Central Government to liquidate the Tata zamindari and take over the land. I am sure that this decision will be implemented at the earliest opportunity.

Dr. Misra was also a secular person. When there were communal riots in Jamshedpur, it was Dr. Misra who with the help of certain comrades of our party and other citizens rescued hundreds of Muslims. When the entire Jamshedpur was ablaze with communal frenzy at its heigl ts, it was Dr. Misra who rescued the minority community. Not only has the Communist Party lost a valiant soldier, not only has Jamshedpur lost a good citizen and fighter for the working class, but the entire trade union world has lost a valiant fighter. On behalf of my group, I wish to offer my sincerest condolences to his family members.

श्री रविराय (पुरी): अध्यक्ष जी, चार, पांच दिन पहले मैं जब श्री उदयकर बाबू जी को अस्पताल में देखने के लिए गया, हमको पता था कि वह अस्पताल में थे, तो मैं उनको इसलिए नहीं देख पाया क्योंकि हमकों पता चला कि उनकी बड़ी लड़की उनको चिकित्सा कराने के लिए सोवियट यूनियन ले गई है।

श्री उदय कर बाबू के बारे में इतना ही कहना काफी है कि वह राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता थे और राष्ट्रीय आन्दोलन के बाद उनके मन में इतना स्वाभिमान था कि टाटा की नौकरी छोड़ करके टाटा नगर में मजदूरों के संगठन में अपनी सारी जिंदगी बितायी जिसका नतीजा यह हुआ कि 1962 के चुनाव में वह लोक सभा में चुन कर आये। इनके बारे में इतना ही मैं जानता हूँ कि टाटा नगर में एक उड़िया भाषी के नाते वह बहुत लोक प्रिय थे और लड़के, लड़कियों द्वारा राजनीति में भाग लेने के लिए उन्हें कोई एतराज नहीं था।

वह एक क्रान्तिकारी आदमी थे जो कि सामाजिक क्रान्ति में भी विश्वास करते थे। मैं अपनी ओर से और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं चाहता हूं कि आप उदयकर बाबू के परिवार वालों के पास शोक व संवेदना का संदेश पहुंचा दें।

SHRI S. KUNDU (Balasore): May I associate myself with the feelings expressed by the Prime Minister and this House. Though I did not know him personally, I have heard so much about him. As has been stated, he was not only a patriot but he championed the cause of labour. He espoused the cause of the teem-

ing millions. Though he belonged to Orissa, he has been responsible by his dedicated work to establish a harmonious link between the people of Orissa and Bihar. Our feelings of condolence may be conveyed to the bereaved family.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): On behalf of my party I wish to associate myself with the sentiments expressed by the Members of the House on the sad demise of Dr. Misra. Those of us who had worked with him in the Third Lok Sabha know that he was a ceaseless fighter for the rights of labour and working class. I want you to convey our deep condolences to the members of the bereaved family.

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (बागपत): अध्यक्ष महोदय, श्री उदयकर मिश्र जैसे राष्ट्रसेवी के निधन पर मैं हार्दिक शोक प्रकट करता हूं और उन्हें अपनी दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

MR. SPEAKER: The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

दण्डकारण्य परियोजना में फालतू कर्मचारी

+

***1021. श्री हुकम चन्द कछवाय:**
श्री वंश नारायण सिंह:
श्री श्रीगोपाल साबू:

क्या श्रम तथा पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) दण्डकारण्य परियोजना में कर्मचारी निरीक्षण यूनिट ने 1 जनवरी, 1968 से आज तक कितने कर्मचारी फालूत घोषित किये हैं;

(ख) उनमें राज-पत्रित तथा अराज-पत्रित अधिकारियों की संख्या कितनी-कितनी है;

(ग) क्या यह सच है कि कुछ अराज-पत्रित कर्मचारी, जो गृह कार्य मंत्रालय "सैल" में थे, उपर्युक्त परियोजना में रख लिए गये हैं;

(घ) क्या यह भी सच है कि इन कर्मचारियों के कुछ पदों का दर्जा घटाया जा रहा है; यदि हाँ, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ङ) जिन कर्मचारियों के पदों का दर्जा घटा दिया गया है उन्हें गृह-कार्य मंत्रालय के सैल में वापिस न भेजने के क्या कारण हैं और क्या उनके पदों का दर्जा घटाने के बारे में उनकी सहमति प्राप्त की गई है?

श्रम, रोजगार तथा पुनर्वास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भागवत झा आजाद): (क) से (ङ). जानकारी एकत्रित की जा रही है और सभा की मेज पर रख दी जायेगी।

अभी उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार, मैं यह जोड़ना चाहूंगा कि कुल 106 तृतीय श्रेणी में और 48 चतुर्थ श्रेणी में कर्मचारी सरप्लस हैं जो कि गृह मंत्रालय के सैल पर हैं।

श्री हुकम चन्द कछवाय: अध्यक्ष महोदय, मैं आप के माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि यह जो लोग सरप्लस किये गये हैं क्या वह इसी कारण से किये गय हैं कि सरकार के पास पैसा बजट में नहीं है और सरकार के पास पैसा नहीं है उनको देने के लिए और यह कि उनकी आवश्यकता नहीं है?

एक ओर तो चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को छांटा है और दूसरी ओर अफसरों की तनख्वाहें बढ़ाई गयी है, अफसरों की पदोन्नति की गई है। इसके अलावा काफी अफसरों को नये सिरे से काम पर लगाया गया है। अब यह दोनों बातें एक साथ नहीं बैठती हैं। मैं जानना चाहता हूं कि मंत्री महोदय ने इस प्रकार से क्यों किया है और किन परिस्थितियों में किया है और बड़े अफसरों को बढ़ाया है? यह जो सरप्लस किये गये हैं इनमें से कुछ लोगों जिनको कि आप ने काम पर लिया है तो उन चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी जिनकी तनख्वाह 140 रूपये माहवार थी उनको अपने में से जो निकाल कर दूसरी जगह आपने प्रोवाइड करवाया है तो उनकी तनख्वाह 75 रूपये कर दी गई। उनकी तनख्वाह 140 से कम होकर 75 हो गई तो मैं जानना चाहता हूं कि ऐसे लोगों में हरिजन और आदिवासी कितने हैं?

श्री भागवत झा आजाद: अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो बताया कि ऐसा इस-